

भारतीय वॉलीबॉल के दिग्गज खिलाड़ी सुरेश कुमार मिश्रा (अर्जुन पुरस्कार विजेता)

सुरेंद्र सिंह

शोधार्थी

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
हनुमानगढ़, राजस्थान

प्रोफेसर (डॉ.) रविंदर सिंह सुमल

डीन, शारीरिक
शिक्षा, खेल व योग
और
निदेशक खेल

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
हनुमानगढ़, राजस्थान

सार

भारतीय वॉलीबॉल के एक महान व्यक्तित्व और प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार विजेता सुरेश कुमार मिश्रा ने भारत में इस खेल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिर भी, उनके जीवन, कार्य और प्रभाव के बारे में हमारी समझ में एक बड़ा अंतर है, भले ही वे कितने भी प्रसिद्ध क्यों न हों। उनकी जीवन कहानी, युवा भारतीयों पर उनकी उपलब्धियों का सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव, और वॉलीबॉल को आम लोगों तक पहुँचाने में उनकी भूमिका, ऐसे कुछ विषय हैं जिनकी आगे की जाँच की आवश्यकता है, जैसा कि यह सार स्पष्ट करता है। उनकी सार्वजनिक छवि पर मीडिया का प्रभाव, सेवानिवृत्ति के बाद की उनकी उपलब्धियाँ और अन्य एथलीटों के साथ उनकी तुलना पर भी कम शोध किया गया है। भारतीय वॉलीबॉल के विकास पर उनके प्रभाव के बारे में जानने का एक तरीका उनकी खेल शैली और तकनीकी क्षमताओं का अध्ययन करना है। यदि इन अंतरालों को भरा जा सके, तो हम भारत में खेल पर मिश्रा के प्रभाव और उनकी स्थायी विरासत को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। वॉलीबॉल पर सुरेश कुमार मिश्रा के स्थायी प्रभाव को पूरी तरह से समझने के लिए, हमें सेवानिवृत्ति के बाद उनकी गतिविधियों में और अधिक जाना होगा, चाहे वे कोचिंग, सलाह या खेल का प्रबंधन हों।

खोजशब्द: - भारतीय वॉलीबॉल, अर्जुन पुरस्कार,

परिचय

शारीरिक शिक्षा वरिष्ठ वर्ग में युवा लोगों की शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। शारीरिक शिक्षा में अपने सीखने के परिणामस्वरूप, युवा लोग, शारीरिक गतिविधियों की एक श्रृंखला में अपने आनंद, आत्मविश्वास और क्षमता को बढ़ा सकते हैं। वे स्वास्थ्य संबंधी फिटनेस के बारे में सीख सकते हैं और वर्तमान और भविष्य में शारीरिक रूप से सक्रिय रहने कि जिम्मेदारी ले सकते हैं। कुल मिलाकर वे शारीरिक गतिविधि और स्वस्थ और पूर्ण जीवन शैली में इसके महत्व के दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं।

इस समूह के युवा शारीरिक शिक्षा में अपनी शिक्षा के लिए कई तरह के कौशल, प्रतिभा और प्रेरणा के स्तर लाते हैं। वे शारीरिक गतिविधि सातत्य के सभी बिन्दुओं पर प्रतिनिधित्व करते हैं। हालांकि ऐसे अन्य लोग भी हैं जो युवा लोगों के लिए शारीरिक गतिविधियों की सिफारिशों को पूरा नहीं कर रहे हैं। (रोग नियंत्रण केन्द्र नियंत्रण और रोकथाम (सीडीसी) 2015) खेल में। प्रतिस्पर्धी शारीरिक गतिविधि या खेल के सभी रूप शामिल हैं, जो कि आकस्मिक या संगठित भागीदारी के माध्यम से, प्रतिभागियों को आनन्द प्रदान करते हुए शारीरिक क्षमता और कौशल का उपयोग रख-रखाव या सुधार करने का लक्ष्य रखते हैं, और कुछ मामलों में मनोरंजन प्रदान करते हैं।

वॉलीबॉल खेल विश्व में फुटबॉल के पश्चात् सबसे अधिक लोकप्रिय खेल जाना जाता है और वॉलीबॉल खेल की शुरुआत अमेरिका से मानी जाती है। इस खेल के आविष्कारक एवं जन्मदाता के रूप में विलियम जी. मॉर्गन को माना जाता है तथा उन्होंने इस खेल की शुरुआत 1895 ई. में की थी। इस खेल के कम खर्चीला होने से इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी और यह आम नागरिकों तक पहुँच गया। 19वीं सदी में इस खेल के शुरुआती दिनों में इसे मिन्टोनेट के नाम से जाना जाता था। इस खेल के जन्मदाता उस समय Y.M.C.A.

होलियोक, मस्सचुसेट्स अमेरिका में फिजिकल डायरेक्ट थे। इन्होंने इस खेल को टेनिस बेसबॉल, बास्केटबॉल तथा हॉटबॉल इन सभी खेलों से मिलाकर बनाया था तथा समय के साथ-साथ इस खेल में सुधार किए गए और 1922 ई. में न्यूयॉर्क में पहली बार वॉलीबॉल खेल प्रतियोगिता Y.M.C.A. के द्वारा आयोजित करवायी गई थी।

साथ ही इसे प्राचीनतम इतिहास की प्रथम प्रतियोगिता मानी गई थी। और इस खेल के सुधार के लिए कुछ नियमों का होना भी जरूरी था। इसलिए 1897 में Y.M.C.A. ने ही विलियम जी. मार्गन के दिशा-निर्देशन में वॉलीबॉल खेल एवं प्रतियोगिता के लिए कुछ नियमों को बनाया। सर्वप्रथम इस खेल की वॉलीबॉल नाम डॉ. एलफर्ड टी हाल स्टीड ने दिया था। उन्होंने 1896 में इस खेल को वॉलीबॉल के नाम से पुकारा था। इससे पहले इस खेल को मिन्टोनेट के नाम से जाना जाता था। 1900 ई. में वॉलीबॉल खेल को कनाडा तथा 1905 ई. क्यूना में प्रारम्भ किया गया।

उद्देश्य -

1. सुरेश कुमार मिश्रा की शैक्षणिक की खेल उपलब्धियों का अध्ययन करना।
2. वॉलीबॉल में सुरेश कुमार मिश्रा के योगदान और पेशेवर करियर की जांच करना।

शोध पद्धति

कार्यप्रणाली की सबसे बुनियादी परिभाषा वह क्षेत्र है जो शोध प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। कार्यप्रणाली या अंतर्निहित मान्यताओं के दार्शनिक विश्लेषण को भी इस शब्द से संदर्भित किया जा सकता है। तकनीक किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक योजनाबद्ध दृष्टिकोण है, जैसे कि कुछ नया सीखना या पहले से मौजूद जानकारी के बारे में किसी दावे की पुष्टि करना। आम तौर पर, इसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं, जिसमें एक नमूना चुनना, उस नमूने से डेटा एकत्र करना और परिणामों का मूल्यांकन करना शामिल है। इन प्रक्रियाओं का गहराई से विश्लेषण और वर्णन करना ही कार्यप्रणाली का सार है। कई दृष्टिकोणों की तुलना करके, यह मूल्यांकन सुविधाओं को शामिल करता है। यह उनके संभावित लाभों और कमियों के साथ-साथ कुछ अध्ययन उद्देश्यों के लिए उनकी उपयुक्तता का मूल्यांकन करने की अनुमति देता है। दार्शनिक मान्यताएँ जिन पर ये आकलन और विवरण आधारित हैं, महत्वपूर्ण हैं।

अध्ययन की रूपरेखा

अध्ययन के लिए मान्य और विश्वसनीय जानकारी एकत्र करने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण का उपयोग किया गया। अन्वेषक ने साक्षरता स्रोतों का व्यापक रूप से उपयोग किया और संबंधित साहित्य की गहन जांच की और डेटा एकत्र करने के उपकरण के रूप में प्रश्नावली विधियों और साक्षात्कार तकनीक को भी अपनाया। हालांकि देश में खेलों को बढ़ावा देने के लिए सुरेश कुमार मिश्रा के योगदान और उपलब्धियों की जांच करने और भारत में एक पेरो के रूप में खेल के संबंध में उनके दर्शन, एक खिलाड़ी के रूप में उनकी गुणवत्ता, उनके पेशेवर नेतृत्व गुणों, उनके प्रशासनिक कौशल और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वॉलीबॉल के खेल में उनके योगदान का अध्ययन करने के लिए एक केस स्टडी तैयार की गई है, जिसमें ऐतिहासिक, जीवनी संबंधी विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक तरीकों का उपयोग किया गया है।

चर

इस केस स्टडी के आधार पर सुरेश कुमार मिश्रा के बचपन, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, शैक्षिक पृष्ठभूमि, स्वभाव, व्यवहार, शौक, जीवन शैली, अभ्यास और प्रशिक्षण पद्धति, खेल कैरियर में कोच की भूमिका, मीडिया की भूमिका आदि के बारे में जानने के लिए विभिन्न प्रकार के चरों का चयन किया गया है।

डेटा के स्रोत

महान वॉलीबॉल खिलाड़ी के केस अध्ययन के लिए डेटा का प्राथमिक स्रोत सुरेश कुमार मिश्रा है। इस शोध में डेटा के द्वितीयक स्रोत की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए इस प्रकार के डेटा स्रोत अनेक परिवार के लोग, खेल प्रशिक्षक, संरक्षक प्रशिक्षक अन्य वॉलीबॉल खिलाड़ी, मीडिया मित्र और भारतीय वॉलीबॉल महासंघ भी है।

नमूनाकरण विधि

यह पुष्टि की गई है कि जब हमने केस अध्ययन किया है तो हम किसी भी नमूनाकरण विधि का उपयोग नहीं कर सकते हैं। केस अध्ययन विशेष व्यक्ति पर पूरा किया जाएगा कि शोधकर्ता किसी भी नमूनाकरण विधि का उपयोग क्यों नहीं कर रहा था।

साक्षात्कार

एक बैठक जिसमें कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति, विशेष रूप से किसी व्यक्ति से उसके कार्य या विचारों के बारे में प्रश्न पूछता है ताकि सूचना प्रकाशित या प्रसारित की जा सके।

प्रश्नावली

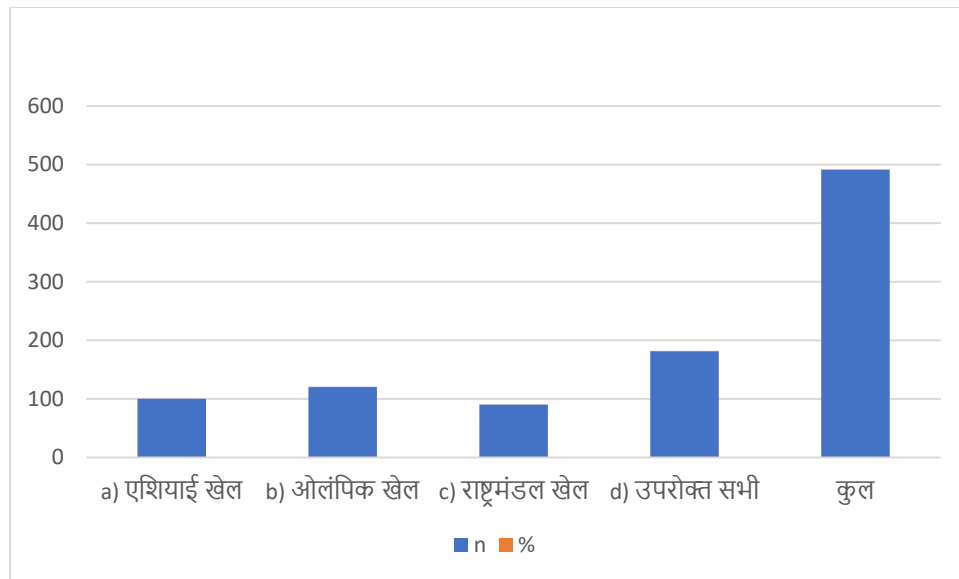
डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रश्नों का एक योजनाबद्ध सेट। इसका उपयोग व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार के रूप में किया जा सकता है। इस अध्याय में अध्ययन की रूपरेखा, डेटा का संग्रह, डेटा / सूचना की व्याख्या का वर्णन किया गया।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

डेटा का मूल्यांकन, सफाई, रूपांतरण और मॉडलिंग की प्रक्रिया ही डेटा विश्लेषण में शामिल है। यह प्रासंगिक जानकारी की पहचान करने, शिक्षित निष्कर्ष विकसित करने और निर्णय लेने में सहायता करने के लिए किया जाता है। डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया, जिसे विभिन्न नामों और दृष्टिकोणों से जाना जाता है और जिसमें उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, का उपयोग कई अलग-अलग विषयों में किया जाता है, जिसमें व्यवसाय, अनुसंधान और सामाजिक विज्ञान शामिल हैं। इस समय, व्यवसायों के लिए डेटा विश्लेषण बहुत आवश्यक है ताकि वे बेहतर, अधिक सूचित निर्णय ले सकें और अधिक प्रभावी ढंग से काम कर सकें। जब हम बिजनेस इंटेलिजेंस के बारे में बात करते हैं, तो हम डेटा विश्लेषण का उल्लेख कर रहे होते हैं जो मुख्य रूप से एकत्रीकरण से संबंधित होता है, जिसमें व्यावसायिक जानकारी पर जोर दिया जाता है। दूसरी ओर, डेटा माइनिंग डेटा विश्लेषण की एक विधि है जो केवल वर्णनात्मक लोगों की तुलना में पूर्वानुमानित कारणों से सांख्यिकीय मॉडलिंग और ज्ञान की खोज से अधिक संबंधित है। वर्णनात्मक सांख्यिकी, खोजपूर्ण डेटा विश्लेषण और महत्वपूर्ण डेटा विश्लेषण डेटा विश्लेषण के तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं जिनका उपयोग सांख्यिकीय अनुप्रयोगों में किया जा सकता है। सी.डी.ए. का लक्ष्य पहले से स्थापित विचारों का समर्थन या अस्वीकार करना है, जबकि ई.डी.ए. का उद्देश्य डेटा के भीतर अद्वितीय विशेषताओं की खोज करना है। पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण के विपरीत, जो आम तौर पर पूर्वानुमान या वर्गीकरण के लक्ष्य के लिए सांख्यिकीय मॉडल का उपयोग करता है, पाठ विश्लेषण पाठ्य स्रोतों के विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है, जो सूचना निष्कर्षण और वर्गीकरण के उद्देश्य से एक प्रकार का असंरचित डेटा है। यह संभव है कि आप उनमें से प्रत्येक चीज़ को डेटा विश्लेषण का एक प्रकार मान सकते हैं। डेटा का विश्लेषण करने की प्रक्रिया डेटा के एकीकरण के बाद आती है, जो फिर डेटा के प्रदर्शन और डेटा के प्रसार की ओर ले जाती है।

तालिका:1 सुरेश कुमार मिश्रा ने वॉलीबॉल में भाग लेकर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित

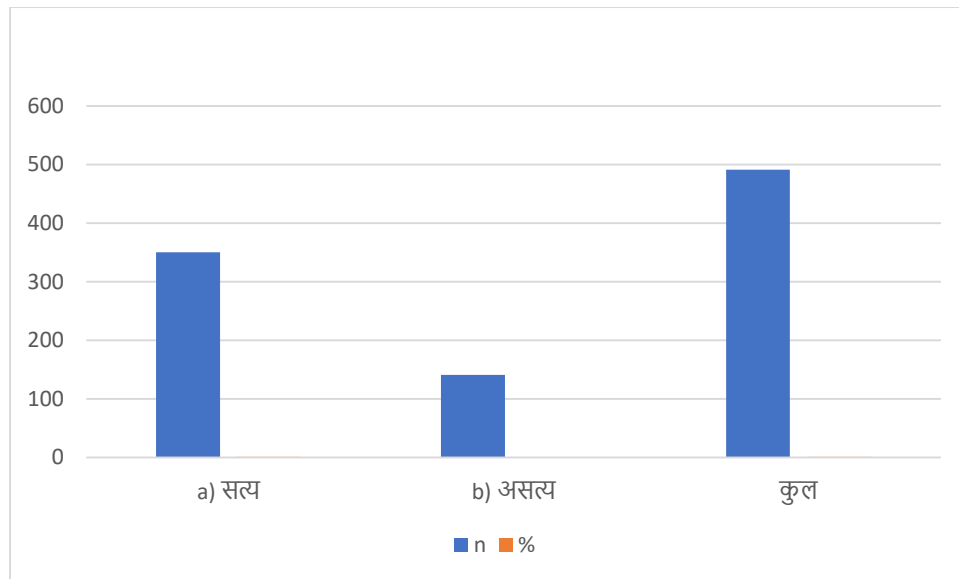
उत्तर विकल्प	n	%
a) एशियाई खेल	100	20.37%
b) ओलंपिक खेल	120	24.44%
c) राष्ट्रमंडल खेल	90	18.33%
d) उपरोक्त सभी	181	36.86%
कुल	491	100%



तालिका 1, वॉलीबॉल की दुनिया में सुरेश कुमार मिश्रा का शीर्ष पर पहुंचना कई अलग-अलग स्थितियों और परिस्थितियों के संगम का परिणाम था। अध्ययन में भाग लेने वाले 166 प्रतिशत व्यक्तियों ने यह तथ्य सामने रखा कि मिश्रा ने एशियाई खेलों, ओलंपिक खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों में भाग लिया था। बड़ी संख्या में महत्वपूर्ण मंचों में उनकी भागीदारी के परिणामस्वरूप उनकी प्रोफाइल निस्संदेह ऊँची हो गई थी। उनकी प्रतिष्ठा के लिए कई कारणों में से एक ओलंपिक खेलों में उनका प्रदर्शन था, जिसे 24.44 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उजागर किया। 23.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि राष्ट्रमंडल खेल उनकी पहचान के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार थे, जबकि 18.33 प्रतिशत का मानना था कि एशियाई खेल मुख्य रूप से जिम्मेदार थे। यहाँ दिखाई गई राय की विविधता यह दर्शाती है कि ओलंपिक जैसी उच्च-प्रोफाइल प्रतियोगिताएँ महत्वपूर्ण थीं, लेकिन विभिन्न स्थानों पर सफलता प्राप्त करने की उनकी क्षमता ने वास्तव में इतिहास में उनकी स्थिति को मजबूत किया। हालांकि, तीनों श्रेणियों में जवाब बहुत समान हैं, जो दर्शाता है कि उनके करियर की मुख्य उपलब्धियों के बारे में विभिन्न दृष्टिकोण हैं। जब सब कुछ ध्यान में रखा जाता है, तो आंकड़े दर्शाते हैं कि वॉलीबॉल में सुरेश कुमार मिश्रा की विरासत बड़ी संख्या में हाई-प्रोफाइल प्रतियोगिताओं में उनकी भागीदारी से काफी प्रभावित है। कई जवाब इन प्रतियोगिताओं में से प्रत्येक में उनकी सफलताओं को स्वीकार करते हैं।

तालिका: 2 सुरेश कुमार मिश्रा ने अपनी शैक्षणिक गतिविधियों को पूर्णकालिक खेल करियर के साथ प्रभावी ढंग से संतुलित किया

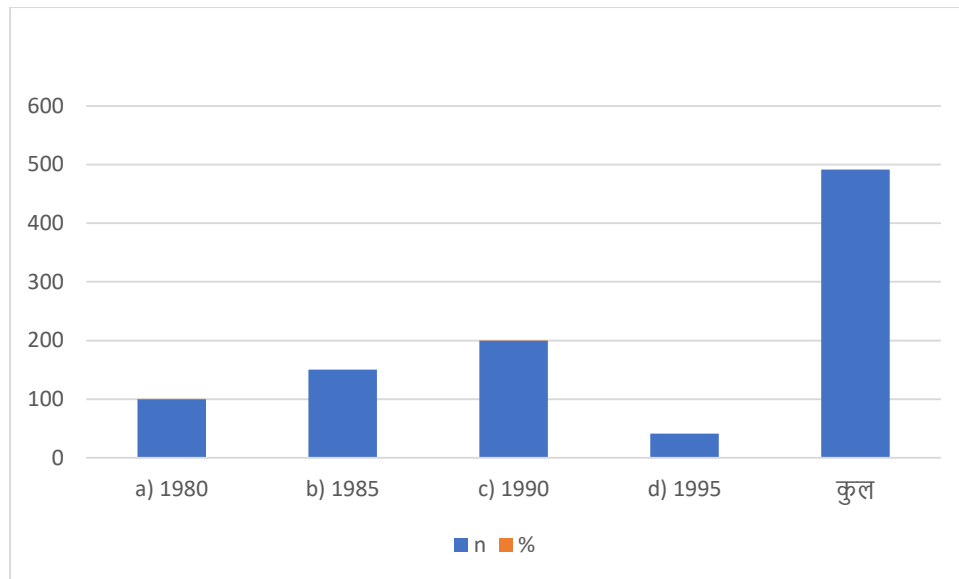
उत्तर विकल्प	n	%
a) सत्य	350	71.30%
b) असत्य	141	28.70%
कुल	491	100%



तालिका 2 सुरेश कुमार मिश्रा की अपनी शैक्षणिक और खेल गतिविधियों के बीच सफलतापूर्वक संतुलन बनाने की क्षमता के बारे में लोगों की धारणाओं का अवलोकन प्रदान करती है। मिश्रा जीवन के इन दो चुनौतीपूर्ण पहलुओं को सफलतापूर्वक संयोजित करने में सक्षम थे, जैसा कि 72.30 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा दिखाया गया है। उन्हें आत्म-नियंत्रण, समय की पाबंदी और दृढ़ता के लिए बहुत उच्च सम्मान में माना जाता है जो उनकी शैक्षणिक और एथलेटिक उपलब्धियों के ट्रेडमार्क थे। यह इन गुणों के लिए उनके द्वारा रखे गए महान सम्मान का प्रतिबिंब है। हालांकि, अध्ययन में भाग लेने वाले 28.50 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वह अपना संयम बनाए रखने में असमर्थ थे। इस अल्पसंख्यक दृष्टिकोण के अस्तित्व के लिए एक संभावित व्याख्या यह धारणा है कि अधिकांश व्यक्ति एक ही समय में दो अलग-अलग विषयों में सफलता प्राप्त करने में सक्षम नहीं होंगे। प्रतिक्रियाओं में पर्याप्त असमानता दर्शाती है कि मिश्रा की उपलब्धियों के असाधारण संयोजन के समर्थन में काफी आम सहमति है। शिक्षा और खेल के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाए रखने का तरीका खोजना कोई आसान काम नहीं है; इसके लिए काफी मात्रा में एकाग्रता और संगठन की आवश्यकता होती है। यह तथ्य कि मिश्रा ऐसा करने में सक्षम थे, न केवल अन्य छात्र-एथलीटों के लिए उत्कृष्टता की आकांक्षा रखने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि किसी के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास दोनों पर संतुलित दृष्टिकोण रखना कितना आवश्यक है। कक्षा में और साथ ही मैदान पर उनकी उपलब्धियाँ दूसरों के लिए एक आदर्श के रूप में काम करती हैं, जो उन्हें दिखाती हैं कि जीवन के सभी पहलुओं में उत्कृष्टता प्राप्त करना संभव है।

तालिका: 3 सुरेश कुमार मिश्रा को अर्जुन पुरस्कार मिला

उत्तर विकल्प	n	%
a) 1980	100	20.37%
b) 1985	150	30.55%
c) 1990	200	40.73%
d) 1995	41	8.35%
कुल	491	100%



तालिका 3 पर एक नज़र डालने पर, हम यह देखने में सक्षम हैं कि आम जनता उस वर्ष के बारे में क्या महसूस करती है जब सुरेश कुमार मिश्रा को प्रतिष्ठित अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह पुरस्कार वार्षिक आधार पर उस एथलीट को दिया जाता है जिसने शानदार एथलेटिक्स दिखाया हो। सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 40.73 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना था कि उन्हें वर्ष 1990 में इस सम्मान से सम्मानित किया गया था। यह वह दृष्टिकोण था जिसने सबसे अधिक समर्थन हासिल किया। 1985 एक और वर्ष था जो उनके उपलब्धियों के वर्ष के लिए एक मजबूत दावेदार था, क्योंकि 300.55% उत्तरदाताओं ने पुरस्कार को उस विशेष वर्ष के साथ जोड़ा। केवल 20.37 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि यह 1980 में प्रदान किया गया था, जबकि 8.35 प्रतिशत ने 1995 को वर्ष के रूप में चुना। इन आंकड़ों के अनुसार, 1990 और 2000 के दशक की शुरुआत में मिश्रा ने जो सफलताएँ हासिल कीं, पहले या बाद के वर्षों में, प्रतिशत छोटे हैं, जो दर्शाता है कि क्रमशः कम निश्चितता या लिंक है। यह डेटा दर्शाता है कि भारतीय वॉलीबॉल पर मिश्रा का प्रभाव और देश के सबसे प्रतिष्ठित खेल पुरस्कारों में से एक के माध्यम से उनकी मान्यता काफी समय तक महसूस की जाती रहेगी। यह सार्वभौमिक सहमति है कि यह वर्ष 1990 के आसपास हुआ था, इस धारणा को बल देता है कि यह उनके शानदार करियर में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसकी आम जनता और एथलेटिक दुनिया दोनों ने प्रशंसा की थी।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, सुरेश कुमार मिश्रा को भारत में वॉलीबॉल के इतिहास में सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक माना जाता है। उन्हें उनकी असाधारण क्षमताओं और खेल के प्रति समर्पण के लिए आभार के प्रतीक के रूप में अत्यधिक पुरस्कृत अर्जुन पुरस्कार दिया गया था। यह सम्मान उन्हें बास्केटबॉल के खेल में उनके उल्लेखनीय योगदान के सम्मान में दिया गया था। हालाँकि, इस तथ्य के बावजूद कि उन्होंने एक विरासत छोड़ी है, अभी भी अकादमिक शोध की पर्याप्त कमी है जो भारतीय संस्कृति के साथ-साथ खेल पर उनके प्रभाव को पूरी तरह से समझने से रोकती है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया है। भारतीय वॉलीबॉल के विकास और खिलाड़ियों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त करने के लिए, उनके शुरुआती करियर से लेकर वॉलीबॉल के दिग्गज के रूप में उनकी चढ़ाई तक, उनकी जीवनी की अधिक विस्तार से जाँच करना फायदेमंद होगा, जहाँ क्रिकेट अक्सर एथलेटिक दृश्य पर हावी रहता है। भारतीय वॉलीबॉल के विकास के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से ऐसा किया जाएगा। मिश्रा की खेल शैली, रणनीतियों और नेतृत्व ने राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर भारतीय वॉलीबॉल को किस तरह प्रभावित किया, इसकी गहरी समझ हासिल करने के उद्देश्य से, अधिक शोध करना आवश्यक है। खेल को लोकप्रिय बनाने और युवा एथलीटों की अगली पीढ़ियों को प्रेरित करने में उनकी भूमिका उनकी विरासत का एक पहलू है, जिसे वह मान्यता नहीं मिली है, जिसके वह हकदार हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. कुमार, वी. (2018). अर्जुन पुरस्कार विजेता दलेल सिंह: एक खिलाड़ी और खेल प्रशासक – एक केस स्टडी (पीएच.डी. शोध प्रबंध)। एम. डी. विश्वविद्यालय, रोहतक।
2. कुमार, सी. (2018). मास्टर चंदगी राम: एक खिलाड़ी, कोच और खेल प्रमोटर के रूप में – एक केस स्टडी (एम.फिल. शोध प्रबंध)। एम. डी. विश्वविद्यालय, रोहतक।
3. निवास, आर. (2019). पद्मश्री और अर्जुन पुरस्कार विजेता श्री रामसिंह: एक उत्कृष्ट एथलीट और कोच – एक केस स्टडी (अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध)। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।

4. पाटिल, आर. (2019). भारतीय कुश्ती के दिग्गज काका पवार पर एक मनो-सामाजिक केस स्टडी (पीएच.डी. शोध प्रबंध)। राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर।
5. बामटा, एस. (2021). अर्जुन पुरस्कार विजेता डॉ. अनिवाश सिद्धू के पेशेवर करियर और भारतीय हॉकी/वॉलीबॉल में योगदान का केस स्टडी (पीएच.डी. शोध प्रबंध)। श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मेडिकल साइंसेज, सीहोर।
6. मुनेन्द्र। (2019). अर्जुन पुरस्कार विजेता मुक्केबाज जितेन्द्र कुमार का जीवनी अध्ययन (पीएच.डी. शोध प्रबंध)। एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक।
7. सहारा भारतीय वॉलीबॉल को प्रायोजित करेगा। (8 मार्च 2023 को पुनःप्राप्त)।
8. सहारा इंडिया भारतीय वॉलीबॉल को प्रायोजित करे। (8 फरवरी 2023 को पुनःप्राप्त)।
9. भारतीय वॉलीबॉल टीम: स्टार नाम और एशियाई खेलों की सफलता। ओलंपिक चैनल। 1 जून 2020।
10. भारतीय वॉलीबॉल महासंघ का गठन। वॉलीबॉल महासंघ।
11. एशियाई खेलों में वॉलीबॉल में भारत के प्रदर्शन की समीक्षा (1958–2010)। स्पोर्ट्सकीड़ा, 16 सितंबर 2014।
12. भारत के सबसे महान वॉलीबॉल खिलाड़ियों में से एक: जिमी जॉर्ज की कहानी। रेड बुल, 15 जनवरी 2018।
13. भारतीय खेलों के पूर्व महारथी: जिमी जॉर्ज – वॉलीबॉल के दिग्गज जिन्होंने कोर्ट के अंदर और बाहर उत्कृष्टता प्राप्त की। 28 अगस्त 2020।
14. एशियाई खेल 2014: भारत पुरुष वॉलीबॉल में पाँचवें स्थान पर। एनडीटीवी, 2 अक्टूबर 2014।
15. वॉलीबॉल महासंघ निलंबित। टाइम्स ऑफ इंडिया, 12 दिसंबर 2016।
16. दक्षिण एशियाई खेल 2019: भारत ने पुरुष और महिला वॉलीबॉल के शिखर मुकाबलों में जीत दर्ज कर स्वर्ण पदक जीता। 3 दिसंबर 2019।
17. Asian Games 2023: Volleyball Schedule, Results, and Scores – India
18. प्रसाद, विष्णु। एशियाई खेल: भारतीय वॉलीबॉल पुरुष टीम ने दक्षिण कोरिया को हराया। द न्यू इंडियन एक्सप्रेस।
19. भारत के पूर्व वॉलीबॉल कप्तान उदयकुमार का निधन। इंडियन एक्सप्रेस, चेन्नई। 1 अक्टूबर 2014 (19 सितंबर 2014 को पुनःप्राप्त)।
20. वॉलीबॉल के दिग्गज को याद करते हुए। द हिंदू, चेन्नई। 1 अक्टूबर 2014 (1 दिसंबर 2012 को पुनःप्राप्त)।